

अध्यात्म एवं विज्ञान

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

किसी भी विषय के व्यवस्थित ज्ञान को विज्ञान कहा जाता है। विज्ञान जड़ पदार्थों का अध्ययन करता है। जड़ का ज्ञान करना उसके सत्य को जानना उसका व्यवस्थित रूप निश्चित करना विज्ञान है। विज्ञान बाह्य जगत पर कार्य करता है। विज्ञान के विषयों का प्रयोगशाला में परीक्षण और अनुसंधान किया जाता है। विज्ञान में नये-नये विषयों का ज्ञान होता है। अध्यात्म आन्तरिक जगत का ज्ञान है। यह चेतना का ज्ञान है। चेतन क्या है? इसके क्या गुण हैं? उनको कैसे जाना जा सकता है? यह महत्वपूर्ण ज्ञान अध्यात्म के माध्यम से प्राप्त होता है। आत्मज्ञान दर्शन का प्रमुख विषय है। मुक्ति का मार्ग ही अध्यात्म का मार्ग है। अध्यात्म भीतर के सत्य को खोजता है और विज्ञान बाहर के सत्य को। दोनों में सामन्जस्य होना चाहिए। मानव जीवन में विकास के लिए दोनों आवश्यक हैं। दोनों में संतुलन आवश्यक है। बाहर का जीवन स्थूल है, अन्दर सूक्ष्म है। विज्ञान के द्वारा हम सब कुछ जान सकते हैं किन्तु आत्मा को नहीं जान सकते। आत्मा अनुभवजन्य है। आत्मा को जानने के लिए चिन्तन, मनन और निदिध्यासन आवश्यक है।

आज के युग में व्यक्तित्व की बहुत चर्चा है। अपने व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने के लिए व्यक्ति विविध उपाय करता है। किन्तु उसके अधिकांश प्रयास बाह्य व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने के लिए होते हैं। आन्तरिक व्यक्तित्व के अभाव में बाह्य व्यक्तित्व बहुत ज्यादा प्रभावित नहीं हो पाता। अतः आवश्यक है कि बाह्य व्यक्तित्व के साथ-साथ आन्तरिक व्यक्तित्व पर भी ध्यान दिया जाये। आन्तरिक व्यक्तित्व से तात्पर्य है आध्यात्मिक व्यक्तित्व। जिस व्यक्ति का आध्यात्मिक व्यक्तित्व जागृत हो जाता है उसे जीवन के सुख-दुःख, राग-द्वेष प्रभावित नहीं कर सकते। आन्तरिक व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया है— योग। योग आत्म-साक्षात्कार की प्रक्रिया है।

आज योग को दैनिक जीवन में समाविष्ट करने का प्रयत्न किया जा रहा है, जिससे व्यक्ति तनावमुक्त, व्याधिमुक्त, कष्टमुक्त, स्वस्थ, संतुष्ट और श्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण कर सके। किसी व्यक्ति विशेष को जानने के लिए उसके व्यक्तित्व की समग्रता जाननी जरूरी है। कोई दो व्यक्ति एक जैसे नहीं होते। व्यक्तित्व व्यक्ति की मात्र अभिव्यक्ति नहीं है, एक समग्र प्रक्रिया है। उपनिषद् काल के दार्शनिकों ने अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय पुरुष के रूप में आत्मा के उर्ध्वारोहण का क्रम दिया है। वैज्ञानिक दृष्टि से जीवन का प्रारंभ माता के डिम्ब और पिता के शुक्राणु के संयोग से होता है। व्यक्ति के आनुवंशिक गुणों का निश्चय क्रोमोसोम द्वारा होता है। क्रोमोसोम अनेक जींस का समुच्चय है। ये जींस ही माता-पिता के आनुवंशिक गुणों के संवाहक हैं। इन्हीं में व्यक्ति की शारीरिक व मानसिक क्षमताएं सन्निहित होती हैं। ऐसी कोई भी क्षमता प्रकट नहीं हो सकती है जो जींस में न हो।

विज्ञान व्यक्तित्व की व्याख्या का मानक मनुष्य को चुनता है, क्योंकि मनुष्य ही वह विवेकशील प्राणी है जो अपना एवं दूसरों का अच्छा-बुरा सोच सकता है, गलत-सही का निर्णय कर सकता है, ह्रास-विकास के क्षणों में वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण रख सकता है। वह संघर्ष, द्वन्द्व के क्षणों में समायोजन का सामर्थ्य भी रखता है। इसलिए व्यक्तित्व में सारी चर्चा व्यक्ति और चरित्र से जुड़ी है। उसके विघटन और संघटन के कारकों की खोज भी की गई है। व्यक्तित्व को जानने और अच्छा बनाने की रूचि हजारों वर्षों से जनमानस में रही है। वर्तमान युग में आधुनिक वैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से अध्ययन किया है। जन-साधारण में व्यक्तित्व का अर्थ जहां व्यक्ति के बाह्य और व्यक्त रूप में लिया जाता है, वहीं विज्ञान में व्यक्तित्व का अर्थ व्यक्ति के आंतरिक ओर बाह्य दोनों गुणों से लिया जाता है।

व्यक्ति का विकास एक सतत प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया जन्म से लेकर जीवन पर्यन्त चलती रहती है। व्यक्तित्व के स्वरूप पर आनुवंशिक कारकों का प्रभाव पड़ता है अतः गर्भकालीन परिस्थितियों को जन्म के बाद प्राप्त होने वाली व्यक्तित्व संरचना की नींव के रूप में माना जाता है। ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि गर्भकालीन दशा में मां की संवेगात्मक दशाओं जैसे-चिन्ता, भय, आवेश आदि का प्रभाव जन्मोपरान्त बच्चे पर परिलक्षित होने लगता है। मां की आयु का

भी बच्चों के व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है। व्यक्तित्व विकास की समग्र प्रक्रिया योग है। योग का प्रारम्भ शरीर शुद्धि से होता है और इसके निरन्तर अभ्यास से मनशुद्धि, भावशुद्धि तथा आत्मशुद्धि की प्राप्ति होती है। आज योग का प्रयोग शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रोगों की चिकित्सा के लिए भी किया जा रहा है।

भारतीय दर्शन में व्यक्तित्व तीन प्रकार के बतलाये गये हैं। सतोगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी। इनमें सतोगुणी व्यक्तित्व सर्वोत्तम होता है। सतोगुणी व्यक्तित्व सत् (अच्छे) गुणों से युक्त, उच्च आदर्शों, नैतिक मूल्यों तथा चरित्र से संपन्न होता है। इसके विपरीत तमोगुणी व्यक्ति कामी, क्रोधी, आलसी तथा अमानवीय गुणों से युक्त होते हैं। रजोगुणी व्यक्ति में इन दोनों के मध्य की स्थिति होती है। सतोगुणी व्यक्ति आध्यात्मिक प्रवृत्ति का होता है।